❶
ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य प्रगति छात्रवृत्ति वितरण समारोह का
सीधा प्रसारण देखें
17 नवंबर 2024 प्रातः 9:30 बजे से
केवल/Only on
आर्य सन्देश टीवी
Arya Sandesh TV
आर्य समाज का एक मात्र टीवी चैनल
Scan to Watch Live TV
aryasandeshtv.com
Google Play YouTube JioTV Jio tv+ dailyhunt

वर्ष 48, अंक 2 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 4 नवम्बर, 2024 से रविवार 10 नवम्बर, 2024
विक्रमी सम्वत् 2081 सृष्टि सम्वत् 1960853125
दयानन्दाब्द : 201 पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दीपावली की पूर्व संध्या पर दिल्ली के ऐतिहासिक रामलीला मैदान में मनाया 141वां महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस

महर्षि के विचारों के अनुरूप सेवा के क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है - आर्य समाज - स्वामी देवव्रत

दिल्ली के समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्वावधान में सम्पन्न हुआ निर्वाणोत्सव समारोह

आर्य समाज के संस्थापक एवं महान समाज सुधारक महर्षि दयानंद सरस्वती जी का संपूर्ण जीवन और सेवा कार्य मानव मात्र को सुदिशा प्रदान करने के लिए कीर्ति स्तंभ है। समूची मानव जाति पर अनगिनत उपकार करने वाले, वसुधा भर पर प्रेमसुधा बरसाने वाले, प्रेम और करुणा की प्रतिमूर्ति, महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने वेद ज्ञान को आधार बनाकर मनुष्य को मनुष्यता का संदेश दिया, सिर उठाकर जीना सिखाया, वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों का पाठ पढ़ाया, देश की आजादी के लिए क्रांति का बिगुल बजाया, भक्त और भगवान के बीच ढोंग, पाखंड, अंध विश्वास और अवरोध बनकर खड़े बहरूपियों को सुपथ दिखाकर कल्याण की राह दिखाई, ऐसे महापुरुष जिन्होंने अपने हत्यारे को भी प्राण दान देकर उपकार की एक महान मिसाल कायम

- शेष पृष्ठ 3-4 पर

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की उत्तराधिकारिणी - श्रीमती परोपकारिणी सभा के तत्त्वावधान में ऋषि उद्यान-अजमेर में

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर भव्य एवं दिव्य ऋषि मेला सम्पन्न

वेदज्ञान से ही मानव का सर्वांगीण विकास एवं उन्नति सम्भव
- आचार्य देवव्रत, महामहिम राज्यपाल, गुजरात

ऋषि उद्यान, आर्यों की प्रेरणा की स्थली
- सुरेन्द्र कुमार आर्य, अध्यक्ष, ज्ञान ज्योति महोत्सव समिति

सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास के आधार पर ईश्वर के बाद धार्मिक, परोपकारी राजा ही सम्मानीय - विनय आर्य, महामन्त्री

संपूर्ण भारत और विश्व में महर्षि दयानंद की शिक्षाओं और आर्य समाज के सेवा कार्यो और बड़े-बड़े आयोजनों की लहर सी चल रही है। लगातार एक से बढ़कर एक भव्य, विशाल और विराट आयोजन संपन्न हो रहे हैं। इस क्रम में 18 से 20 अक्टूबर 2024 तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200 वी जंयती के उपलक्ष्य में ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर, राज. के प्रांगण में 18 से 20 अक्टूबर 2024 तक तीन दिवसीय भव्य और दिव्य ऋषि मेला समारोह पूर्वक संपन्न हुआ। जिसमें गुजरात के माननीय राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी, सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी, ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति

- शेष पृष्ठ 5 एवं 7 पर

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती की दो वर्षीय आयोजन
देशभर में विभिन्न स्थानों पर हो रहे हैं भव्य एवं विशाल कार्यक्रम

आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा
एवं
गुरुकुल कुरुक्षेत्र
के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित
आर्य महासम्मेलन
9-10 नवम्बर 2024 | गुरुकुल कुरुक्षेत्र

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि०)
गुरुदत्त भवन, किशनपुरा चौक, जालंधर के तत्वावधान में
पंजाब प्रांतीय आर्य महासम्मेलन
10 नवंबर 2024 (रविवार)
सम्मेलन स्थल
लवली प्रोफैशनल यूनिवर्सिटी, जालन्धर-फगवाड़ा हाईवे

उत्तर प्रदेश पर्यटन एवं संस्कृति विभाग एवं
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा
ज्ञान ज्योति पर्व स्मरणोत्सव
16, 17, 18 नवम्बर 2024
(दिन : शनिवार, रविवार, सोमवार)
आर्य गुरुकुल महाविद्यालय, सिरसागंज फिरोजाबाद

देववाणी-संस्कृत

हे आदित्यो! मरने से पूर्व मुझे बचा लो

वेद-स्वाध्याय

जीवान्नो अभि धेतनादित्यासः पुरा हथात्। कद्ध स्थ हवनश्रुतः।।

-ऋ० 8।67।5

ऋषिः - मत्स्यः साम्मदः, मैत्रावरूणिर्बहवो वा मत्स्या जालनद्धाः।।
देवता - आदित्यः।। **छन्दः** - निचृद्गायत्री।।

शब्दार्थ - **आदित्यासः** हे आदित्यो! **अभिधेतन** दौड़ो **जीवान् नः** = हम जीते रहतों के पास **हथात् पुरः** मारे जाने से पहले ही दौड़ो। **हवनश्रुतः** हे पुकार सुननेवाले! **कद्ध स्थ**= तुम कहाँ हो?

विनय- हे आदित्य देवो! दौड़ो! हमें बचाओ! मौत हमारे सामने मुँह खोले खड़ी है। अगले ही क्षण में हम उसके ग्रास होनेवाले हैं। भोगों को भोगते हुए तो हमें मालूम न था कि यह आसानी से भोगे जाते हुए भोग एक दिन भोक्ता बनकर हमें खाने के लिए आएँगे। उस समय हम खुशी से अपने को इन विषयों के बन्धन-जाल में बाँधते गये; यह अनुभव न किया कि हम सत्य के जाल में बँध रहे हैं, परन्तु अब इस समय का-यह मृत्यु-मुख में जाने का एक क्षण, पश्चात्तापमय यह एक क्षण, शेष सारे बीते हुए जीवनकाल के मुकाबले में खड़ा है। बस, यही एक क्षण है इस बीच, हे आदित्यो! मैं तुम्हें पुकार रहा हूँ। सुना है तुम जगदीश्वर की अखण्डनीय शक्तियाँ हो, तुम बन्धन-जाल से छुड़ाने वाली शक्तियाँ हो, तुम प्रकाश देने वाली शक्तियाँ हो। तुम कहाँ हो? मेरी पुकार क्यों नहीं सुनते? क्षणभर में दम निकलना चाहता है। तुम तो 'पुकार सुनने वाले' (हवनश्रुत) प्रसिद्ध हो। तुमने बड़े-बड़े पापियों के हार्दिक पश्चात्ताप के करुण-क्रन्दनों को सुना है और उन्हें अन्तिम समय में भी उबारा है। क्या यह मेरा इस समय का पश्चात्तपमय रुदन भी हृदय से निकला रुदन नहीं है? तो फिर तुम क्यों नहीं सुनते? क्यों नहीं दौड़कर मुझे बचाते? क्या अगले क्षण जब मैं मर चुकूँगा, मेरा विनाश पूर्ण हो चुका होगा, मेरी ही समाप्ति हो चुकी होगी, जब आओगे? तब क्या बनेगा? ओह! यदि मेरा उबारना अभीष्ट है तो ये जो जीवन के दो-चार पल शेष हैं, इन्हीं में आ पहुँचो। दौड़ो, मुझे बचाओ, मुझे बचाओ!

-:साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

असली बाबा - बनाम - नकली बाबा - ये कैसी जंग?

अभिनव अरोड़ा नाम का बच्चा सोशल मीडिया से लेकर लोगों की जुबान पर चर्चा का विषय बना हुआ है। कथित 'बाल संत' के रूप में फेमस हुआ अभिनव अब विवादों में घिर गया है। सोशल मीडिया पर इसके कई वीडियो वायरल हुए, जिसमें इसके मां-बाप पर रील बनाने के लिए कुछ भी करने का आरोप लगा है।

अब अभिनव के माता-पिता ने कई यूट्यूबर्स के खिलाफ यह कहते हुए एफ. आई .आर. दर्ज कराई है, कि इनकी वजह से बच्चों की छवि खराब हो रही है और उसे बदनाम करने की पूरी साजिश रची जा रही है। उनकी धार्मिक भावना को ठेस पहुंची है।

अब अगर इसमें धार्मिक भावना को ठेस का मामला खोजा जाए तो इतना था, कि यूट्यूबर के दावों के अनुसार, अभिनव कैमरे के सामने जो भी बोलता है, उसे बस बोलकर सुनाता है। उसका दावा है कि अभिनव को कैमरे के सामने कुछ बातें कहने के लिए ब्रेनवॉश किया गया है और इसके लिए सिर्फ़ उसके माता-पिता ही ज़िम्मेदार हैं। कि कैसे वे अपने बच्चे का ब्रेनवॉश कर रहे हैं, उसे सच्ची आध्यात्मिकता से परिचित कराए बिना उसका बचपन बर्बाद कर रहे हैं यह सब ब्रांड जुड़ाव, मीडिया प्रचार और पैसा हांसिल करने के लिए किया जा रहा है!

वीडियो में यह भी कहा गया, "उसके पिता उसे बाजार में एक उत्पाद की तरह बेचने की कोशिश कर रहे हैं और बच्चा बड़ा होकर यह सोचेगा कि वह ही भगवान है, जो उसके भविष्य में उसके लिए बहुत समस्याजनक हो सकता है।"

इसी कड़ी में वृंदावन के बांके बिहारी मंदिर के एक पुजारी ने एक न्यूज़ चैनल से बातचीत में कहा, "यह बच्चा क्या जानता है? यह 10 वर्षीय बच्चा भगवद गीता, इसके व्याकरण और इसके सिद्धांतों को कैसे समझ सकता है? उसने कहाँ से पढ़ाई की है? उसका गुरु कौन है?"

अब सवाल है कि आखिर इस केस से अभिनव का परिवार क्या साबित करना चाहता है? यही कि लोग डर जाएं और उनके बेटे के नाटक पर कोई सवाल न उठाएं? आखिर क्यों बेटे को जबरदस्ती वो ज्ञानी बाबा बनाने पर लगे हैं?

चलो मान लिया बचपन में अभिनव का मन वैरागी हो गया, वो राधा रानी का जाप करने लगा, उसे महसूस हुआ कि वह श्रीकृष्ण का बड़ा भाई है और कृष्ण उनकी ऊँगली पकड़कर चलते हैं, उनसे कथा सुनते हैं? लेकिन सवाल है कि क्या अभिनव को संस्कृत भाषा का ज्ञान है? और जिस भगवान कृष्ण ने गीता का सार दिया हो, धर्म, भक्ति, कर्म की सरल व्याख्या की हो, वह कृष्ण एक युग बीतने के बाद इतने लाचार हो जाएंगे कि अभिनव से कथा सुनेंगे?

इस तरह की बात पर कौन विश्वास करेगा? भारत की सनातन जनता पहले ही बाबाओं, ओझाओं में उलझी पड़ी है। कई सारे बाबा पहले ही जेल में पड़े हैं। इसके अलावा सोशल मीडिया पर कोई पंखा बाबा, कोई बुलेट वाला बाबा, काई ये बाबा, कोई वो बाबा वीडियो बनाकर अपलोड कर रहे हैं। सोचकर देखिए, सनातन धर्म को इन बाबाओं ने क्या दिया?

आस्था अलग बात है, आस्था रखनी चाहिए, लेकिन क्या यह बाबा ईश्वर से भी बड़े हो गए? असल में देखा जाए तो जब सूचना क्रांति के दौर में भारत ने भी शेष दुनिया के साथ अगली शताब्दी में कदम रखा था, तब अचानक से यह बीमारी हमारे समाज में घर कर गई थी। जहाँ चीन से लेकर यूरोपीय देश विज्ञान और तकनीकी के माध्यम से अपना भविष्य बनाने में जुटे थे, तब हम अपना हाथ बाबाओं के हाथ में देकर बैठ गए। जब वहां के लोग टी.वी. आदि संचार के माध्यमों से विज्ञान का प्रसारण कर अगली पीढ़ी को ज्ञान और आधुनिकता से जोड़ रहे थे, तब भारत को रसातल में पहुँचाने के लिए टी.वी. पर सुबह-सुबह इक्का-दुक्का बाबाओं का आगमन

.....व्यापारवाद के चलते ही कई लोग स्वयंभू बाबा, साधु और संत कुकुरमुत्तों की तरह पैदा होकर टी.वी. चैनलों पर बैठे रहे। अब तो सोशल मीडिया का युग है, टीवी छोड़कर अपने खुद के चैनल बना लिया। अपने अगले पल की जानकारी इन्हें भले ही न हो, पर लोगों के भविष्य को आर-पार शीशे की तरह देखने का ऐसा ढोंग रचते हैं कि इंसान अपनी जमा पूंजी तक इन्हें सौंप देता है। कहा जाता है जब व्यक्ति धर्म के मार्ग से भटक जाते हैं, तभी ठग लोग बाजार में उतर आते हैं और ये भोली-भाली जनता को भगवान, प्रलय, ग्रह-नक्षत्र और भाग्य से डराकर लूटते हैं।.....

शुरू हो गया था। सूचना क्रांति के इस माहौल में दाती महाराज जैसे लोग आधुनिक भारत की उपज थे, जो कैमरे और टी.वी. की भाषा और लोगों की मनोवृत्ति से अच्छी तरह परिचित थे।

धर्म से बिजनेस को जोड़ने वाला यह एक ऐसा शॉर्टकट था कि अन्य बड़े-बड़े चैनल इस बाबा से भविष्य पूछते रह गए। बरहाल, देखी-देखी सुबह का एक घंटा ज्योतिष बाबाओं के नाम कर दिया गया। सभी चैनल धर्म से व्यापार की इस बहती धारा में टी.आर.पी. की डुबकी लगाने लगे।

बड़े-बड़े उद्योगपति से लेकर राजनेता हो या अभिनेता, इनमें रुचि लेते दिखाई दिए। तो भला मध्यम वर्ग पाखंड की इस खुराक से कहाँ पीछे रहने वाला था। धर्म के सच्चे रक्षक और ज्ञानीजन हैरान थे, तो धर्म की झूठी व्याख्या कर अधर्म और पाखंड की एक नई अनोखी स्थापना हो रही थी।

धर्म की इस दौड़ और अंधी कमाई में अचानक से एक और निर्मल बाबा नामक व्यक्ति का दरबार सजने लगा। यहाँ भी टी.वी. पर विज्ञापनों से धड़ाधड़ 'कृपा' बरसने लगी। बाबा किसी को कोई बड़ी तपस्या या धार्मिक आचरण की सलाह नहीं देता है, बस छुटपुट काम हैं जैसे किस रंग के पर्स में पैसा रखना और अलमारी में दस के नोट की एक गड्डी रखना, लाल चटनी से समोसा खाना, सोमवार को एक-दो लीटर दूध चढ़ाना आदि-आदि।

अचानक इस व्यापार में मुसलमान भी हाथ आजमाने लगे। आसिफ नाम का मुसलमान आसू महाराज बनकर टीवी मीडिया के जरिए करोड़ों में खेलने लगा। ना केवल खेलता है, बल्कि हिंदू महिलाओं की आबरू भी लूटने लगा। जब पकड़ा गया, तो कहता है कि हिंदू पागल हैं, किसी पर भी विश्वास कर लेते हैं। इस कारण वो हिंदू बाबा बना।

शायद इसी व्यापारवाद के चलते ही कई लोग स्वयंभू बाबा, साधु और संत कुकुरमुत्तों की तरह पैदा होकर टी.वी. चैनलों पर बैठे रहे। अब तो सोशल मीडिया का युग है, टीवी छोड़कर अपने खुद के चैनल बना लिया। अपने अगले पल की जानकारी इन्हें भले ही न हो, पर लोगों के भविष्य को आर-पार शीशे की तरह देखने का ऐसा ढोंग रचते हैं कि इंसान अपनी जमा पूंजी तक इन्हें सौंप देता है। कहा जाता है जब व्यक्ति धर्म के मार्ग से भटक जाते हैं, तभी ठग लोग बाजार में उतर आते हैं और ये भोली-भाली जनता को भगवान, प्रलय, ग्रह-नक्षत्र और भाग्य से डराकर लूटते हैं।

आम लोगों को डराने के लिए इनके पास कुछ प्रसिद्ध वाक्य होते हैं: "आप पर शनि की छाया है, चुड़ेलों की नजर है, भूतों ने आपको जकड़ रखा है। *- जारी पृष्ठ 7 पर*

प्रथम पृष्ठ का शेष

दीपावली की पूर्व संध्या पर ..... मनाया 141वां महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस.....

की। उनकी 200 वीं जयंती और आर्य समाज के 150 वें स्थापना दिवस के 2 वर्षीय आयेजनों के बीच आर्य केंद्रीय सभा, दिल्ली, राज्य के तत्वाधान में 141 वें निर्माण दिवस 30 अक्टूबर 2024 को दिल्ली के रामलीला मैदान में भव्य समारोह के रूप में संपन्न हुआ, जिसमें दिल्ली की समस्त आर्य समाजों, वेद प्रचार मंडलों, शिक्षण संस्थानों के अधिकारी, कार्यकर्ता, सदस्य और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

पंच कुंडीय यज्ञ से कार्यक्रम का आरंभ हुआ। जिसमें 40 से अधिक दंपति यजमान बने, उनमें तीन यज्ञ कुंडों पर आर्य समाज के संवर्धक श्री धर्मवीर जी के नेतृत्व में गोविंदपुरी क्षेत्र एवं श्री दिनेश आर्य जी प्रिंसेस पार्क, जय जय कॉलोनी के सदस्य तथा सुश्री कमला मंडल जी के नेतृत्व में वीरांगनाएं यजमान बनी और सभी ने विश्व कल्याण की कामना करते हुए श्रद्धापूर्वक आहुति प्रदान की। श्रीमती विजयलक्ष्मी सूद जी (समाजसेवी) ने ध्वजारोहण किया, महर्षि दयानंद सरस्वती जी के प्रति श्री सुरेंद्र रैली जी, प्रधान, आर्य केंद्रीय सभा, दिल्ली राज्य, श्रीमती वीना आर्या जी, उपप्रधान श्रीमती उषा किरण आर्य जी, सर्व श्री कीर्ति शर्मा जी, अरुण प्रकाश वर्मा जी, हरिओम बंसल जी, कोषाध्यक्ष मनीष भाटिया जी, श्री सतीश चडडा जी महामंत्री एवं श्री विनय आर्य जी इत्यादि महानुभावों ने संयुक्त रूप से उनके 141वें निर्वाण दिवस पर श्रद्धांजलि अर्पित की तथा महर्षि के विचारों के अनुरूप चलने का संकल्प लिया। महर्षि दयानंद सरस्वती जी को उनकी पुण्यतिथि की पूर्व संध्या पर स्मरण करते हुए अनुभव किया कि उनका प्रभाव आज भी हमारे समाज पर गहराई से अंकित है। महर्षि एक महान समाज सुधारक, दार्शनिक और वेद ज्ञान के प्रबल समर्थक के रूप में शिक्षा, समानता और सामाजिक सुधार की प्रेरणा थे, उन्होंने आत्मनिर्भरता से जीना सिखाया एवं राष्ट्र का गौरव बढ़ाया, महिलाओं का सम्मान बढ़ाया, जाति गत भेदभाव का अंधेरा दूर भगाया और सभी के लिए समान शिक्षा का पथ दिखलाया। महर्षि दयानंद द्वारा स्थापित आर्य समाज के सिद्धांत, सत्य आचरण और तर्क संगत सोच पर आधारित हैं, जो समाज में एक आदर्श और एक उन्नत जीवन का संदेश देते हैं, वेदों के ज्ञान पर आधारित महर्षि का जीवन और उनके विचार आज भी एक सशक्त प्रगतिशील समाज को दिशा और प्रेरणा देते हैं और भविष्य में भी देते रहेंगे, सभी आर्यजनों ने संकल्प लिया, कि हम महर्षि के विचारों और उनकी शिक्षाओं को स्वयं धारण करेंगे तथा संपूर्ण विश्व में प्रचारित करेंगे और करवाएंगे।

आचार्य स्वामी देवराज जी, प्रधान सेनापति, सार्वदेशिक आर्य वीरदल ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी को श्रद्धांजलि देते हुए वेद के मंत्र को आधार बनाकर कहा कि महर्षि दयानंद एक महान आत्मा थे, उन्होंने मानव कल्याण के लिए असाधारण कार्य किए, सत्य के प्रकाश के लिए सत्यार्थ प्रकाश बनाया, देव कभी सोते नहीं, वे ब्रह्म का चिंतन करते हैं, महर्षि ने देश का गौरव बढ़ाया, जर्मन के वैज्ञानिको से आधुनिक तकनीक सीखने के लिए देशवासियों को प्रेरित किया, गुजरती होते हुए भी हिंदी भाषा को न केवल स्वयं अपनाया बल्कि राष्ट्र भाषा के रूप में स्थापित करने पर बल दिया, उन्होंने राष्ट्र की स्थिति को समझा और देश को आजाद कराया, वे मर्यादा में श्री राम, नीति में श्री कृष्ण, ब्रह्मचर्य में भीष्म थे, ऐसे ऋषि जो यज्ञ, परोपकार और सेवा के लिए समर्पित रहे। आज आर्य समाज जो सहयोग, सेवा और कल्याण के कार्य कर रहा है वह सब महर्षि दयानंद की ही देन है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने श्री राजकुमार जी, जो आर्य प्रतिभा विकास संस्थान के सेवा कार्यों को आगे बढ़ा रहे हैं, उनका परिचय कराते हुए, कहा कि आप परोपकार और सेवा के लिए समर्पित होकर निरंतर आर्थिक रूप से कमजोर लेकिन मेधावी छात्र-छात्राओं को उच्च प्रशासनिक सेवाओं की तैयारी कराने हेतु, दिल्ली में आवास, भोजन और कोचिंग की निशुल्क व्यवस्था करके जो कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं। इसके लिए आप बधाई के पात्र हैं, इस अवसर पर श्री राजकुमार जी को साल एवं पीत्त वस्त्र तथा स्मृति चिन्ह भेंट करके सम्मानित किया गया, श्रीमती कल्पना आर्य जी ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में वर्तमान परिस्थितियों और चुनौतियों का सामना करने के लिए समाज को जागृत करते हुए कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती के सभी अनुयायियों को पूरी शक्ति और सामर्थ्य के साथ जो ढोंग, पाखंड, अंधविश्वास और षड्यंत्र चल रहे हैं, उनका सामना करना ही पड़ेगा, क्योंकि आर्य समाज का इतिहास रहा है, कि यहां जब-जब समस्याएं आई तो आर्य समाज ही समाधान बनकर सामने आया, श्रीमती सुरेखा चोपड़ा जी को उनके द्वारा वेद परिवार निर्माण योजना को गतिशील रखने के लिए श्रीमती हर्ष नारंग जी द्वारा महिला कार्यकर्ता पुरस्कार से सम्मानित किया गया, श्री अनिल शास्त्री जी को डॉक्टर भुमुक्षु जी द्वारा पंडित गुरु दत्त विद्यार्थी स्मृति पुरस्कार प्रदान किया गया, केंद्रीय सभा के प्रधान श्री सुरेंद्र रैली की ने सभी सदस्यों का धन्यवाद किया और सबको महर्षि के दिखाएं मार्ग पर चलने हेतु प्रयास करने का आह्वान किया। श्री धर्मपाल आर्य जी प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा श्रीमती वीना आर्या जी द्वारा संपादित और आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित प्रेरक पुस्तक ''आर्य संगीत'' का विमोचन किया गया। इसमें श्री सुरेंद्र कुमार रैली जी, श्री सतीश चडडा जी, श्री विनय आर्य जी तथा गणमान्य सदस्य उपस्थित रहे, महर्षि दयानंद सरस्वती के जीवन और उनके सेवा कार्यों पर आधारित नृत्य नाटिका प्रस्तुत की गई, जिसको श्रीमती मीना जी के नेतृत्व में एसएम आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग पश्चिम के विद्यार्थियों ने सुंदर मंचन किया कार्यक्रम को सफल बनाने में सभा के कोषाध्यक्ष श्री मनीष भाटिया जी, मंत्री श्रीमती सरोज यादव जी, सर्वश्री सुरेंद्र चौधरी जी, डॉ. मुकेश आर्य जी, श्री गजेंद्र चौहान जी, आर्य संजीव कोहली जी, आर्य संजीव क्षेत्रपाल जी, आचार्य जयप्रकाश जी, कोरियोग्राफर श्री कमल जी एवं आर्य संदेश मीडिया केंद्र तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय के सहयोगियों का विशेष धन्यवाद किया जाता है जिन्होंने व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने में अपना अत्यंत सहयोग दिया, प्रेम सौहार्द के वातावरण में सभी ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए तथा उनके बताए हुए रास्ते पर चलने का संकल्प लिया।

- आर्य सतीश चडडा,
महामंत्री, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली

दिल्ली सभा एवं सहयोगी संस्थाओं के कार्यकर्ताओं के लिए सुख समृद्धि यज्ञ एवं दीपावली पुरस्कार वितरण

वैदिक धर्म संस्कृति और संस्कारों में पर्वों का विशेष महत्व सदा से रहा है, शारदीय नवसस्येष्टि दीपावली के अवसर पर 29 अक्टूबर 2024 को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में कार्यरत सभा एवं सहयोगी संस्थानों के कार्यकर्ताओं के लिए सुख-समृद्धि यज्ञ एवं दीपावली पुरस्कार प्रदान किए गए, इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केंद्रीय सभा, दिल्ली राज्य, अखिल भारतीय दयानंद सेवा श्रम संघ, आर्य मीडिया सेंटर, सहयोग, संवर्धक प्रकल्प एवं अन्य सभी विभागों के कार्यकर्ताओं को अधिकारियों द्वारा शुभकामनाएं प्रदान की गई ।

इस अवसर पर सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल जी, उप प्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य जी, श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी, श्री सतीश चड्ढा जी, श्री जोगेंद्र खट्टर जी, श्री सुखवीर आर्य जी, श्री सुरेंद्र आर्य जी, श्री अशोक गुप्ता जी, श्री कृपाल सिंह आर्य जी, श्री सुरेश चंद्र गुप्ता जी इत्यादि महानुभावों ने सभी कार्यकर्ताओं को उपहार सहित दीपावली की शुभकामनाएं दी। सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी और विनय आर्य जी ने आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी को शत-शत नमन करते हुए, उनके 141 वें निर्वाण पर श्रद्धांजलि अर्पित की और आर्य समाज के सेवा कार्यों को महत्वपूर्ण बताते हुए समर्पित भाव से कर्म रत रहने का संदेश दिया। सर्वप्रथम आर्य समाज हनुमान रोड के प्रांगण में सब ने मिलकर सामूहिक यज्ञ किया और इसके उपरांत पुरुस्कार वितरण के बाद जलपान के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

प्रथम पृष्ठ का शेष

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में 13 दिवसीय महिला यज्ञ प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

भारतीय संस्कृति का आधार स्तम्भ है यज्ञ -विनय आर्य

आर्य समाज सदा से महिलाओं के उत्थान और सम्मान को सुनिश्चित करने के लिए संकल्पित है । इस क्रम में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा विशेष रूप से 15-27 अक्टूबर 2024 तक 13 दिवसीय यज्ञ प्रशिक्षण शिविर समारोह पूर्वक संपन्न हुआ। दिल्ली हरियाणा बार्डर के निकट गाँव सावदा में स्थित सावदा कॉलोनी, जहां लगभग 25-30 हज़ार की संख्या में लोग बसते हैं, जिसमें 10-15 प्रतिशत मुस्लिम व ईसाई मिशनरी द्वारा धर्मांतरण का कार्य चल रहा हैं। वहां की वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए इस क्षेत्र में महिलाओं को आर्यसमाज से जोड़ने के लिए 15-27 अक्टूबर 2024, को 13 दिवसीय यज्ञ प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन 13 दिनों में 10 बहनों को यज्ञ करने व अन्य परिवारों में यज्ञ करवाने के लिए प्रशिक्षित किया गया। इस यज्ञ प्रशिक्षण

- शेष पृष्ठ 6 पर

सुशील राज आर्य प्रतिभा विकास संस्थान द्वारा छात्रवृत्ति परीक्षा एवं प्रतिभागी एकत्रीकरण कार्यक्रम

आर्य समाज पिछले 150 वर्षों से मानव सेवा और निर्माण के मूलमंत्र को लेकर निरन्तर कीर्तिमान स्थापित करता आ रहा है। इस क्रम में आर्य प्रतिभा विकास संस्थान द्वारा प्रतिभावान अभावग्रस्त विद्यार्थियों को उच्च प्रशासनिक सेवाओं की तैयारी लिए दिल्ली में आवास, भोजन और उत्तम कोचिंग की सुविधा उपलब्ध कराना और शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थीयो सर्वांगीण विकास ही आर्य प्रतिभा विकास संस्थान, हरिनगर, दिल्ली इकाई का मुख्य उद्देश्य है। इसके लिए 13 अक्टूबर 2024 को एस एम आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग में आगामी सत्र 2024-25 के प्रतिभागी विद्यार्थीयों के चयन की परीक्षा का आयोजन किया गया। जिसमें भारत के विभिन्न राज्यों से आए प्रतिभावान विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी, महामंत्री श्री विनय आर्य जी, श्री सतीश चडडा जी एवं अनेक अन्य महानुभाव आर्य नेता उपस्थित रहे।

श्री विनय आर्य जी ने उपस्थित विद्यार्थियों को आर्य समाज का परिचय देते हुए बताया कि अखिल भारतीय दयानंद सेवा श्रम संघ के तत्वावधान में आर्य समाज निरंतर शिक्षा, चिकित्सा और सेवा के क्षेत्र में विद्यार्थियों को आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करता आ रहा है। आर्य प्रतिभा विकास संस्थान पिछले 6 वर्षों से लगातार अभावग्रस्त विद्यार्थीयों को सिविल परीक्षा की तैयारी हेतु दिल्ली में निशुल्क आवास,भोजन और कोचिंग प्रदान करता रहा है, जिसके पीछे आर्य समाज की भावना है कि हर प्रतिभावान विद्यार्थी आगे बढ़ें और देश की सेवा करें, इस अवसर पर सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री राज कुमार जी,चेयरमेन आर्य प्रतिभा विकास संस्थान, श्री सत्यानंद आर्य, श्री जोगेंद्र खट्टर, श्री जितेन्द्र सिंह गुप्ता, श्री सतीश चडडा, श्रीमती उमा शशि दुर्गा, श्री अजय कालरा भी उपस्थित रहे।

आर्य प्रगति स्कॉलरशिप वितरण
रविवार 17 नवम्बर, 2024 प्रातः 10:30 बजे

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ एवं आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के सहयोग से संचालित आर्य प्रगति स्कॉलरशिप का वर्ष 2024 के लिए वितरण समारोह **रविवार 17 नवम्बर, 2024** को प्रातः 10:30 बजे से **आर्यसमाज मन्दिर, सी-606 डिफेंस कालोनी, नई दिल्ली** के सभागार में आयोजित किया जाएगा। देशभर से चयनित प्रतिभागी विद्यार्थियों को ईमेल एवं व्हाट्सएप्प के माध्यम से सूचना भेज दी गई है।

योजना के विषय में अधिक जानकारी के लिए दिए गए क्यूआर कोड़ को स्कैन करें/मोबाइल पर सम्पर्क करें अथवा वैबसाईट पर लॉग-इन करें।

aryapragati.com
9311721172

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की उत्तराधिकारिणी - श्रीमती परोपकारिणी सभा के तत्त्वावधान में ऋषि उद्यान-अजमेर में

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर भव्य एवं दिव्य ऋषि मेला सम्पन्न

यज्ञाहुतियां प्रदान करते राज्यपाल गुजरात आचार्य देवव्रत जी, श्री सुरेन्द्र कमार आर्य जी, राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष श्री वासुदेव देवनानी एवं परोपकारिणी सभा के अधिकारी। इस अवसर पर श्री वासुदेव देवनानी जी एवं परोपकारिणी सभा के अधिकारियों को महर्षि दयानन्द के अनमोल वचन ग्रंथ भेंट करते श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी।

ध्वजारोहण करके समारोह का विधिवत शुभारम्भ करते 200वीं जयन्ती आयोजन महत्सिव समिति के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य। साथ में हैं परोपकारिणी सभा के प्रधान श्री ओममुनि जी, पूर्व प्रधान श्री सत्यानन्द आर्य, दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य, सोमरत्न आर्य, आर्य वीर दल दिल्ली पेदश के आर्यवीर एवं अन्य आर्य महानुभाव

स्मारिका का विमोचन करते सर्वश्री आचार्य देवव्रत जी, सुरेन्द्र कमार आर्य जी, वासुदेव देवनानी जी, भागीरथ चौधरी जी, डॉ. योगानन्द शास्त्री जी एवं परोपकारिणी सभा के अधिकारी।

साप्ताहिक स्वाध्याय

आर्यसमाज का विस्तार

गतांक से आगे-

बम्बई, युक्तप्रान्त सौर पंजाब में आर्यसमाजों की स्थापना हो चुकी थी। आर्यसमाज के सभासद् हजारों की संख्या तक पहुंच चुके थे। जितने सभासद् थे, महर्षि दयानन्द के भक्त और अनुयायी उनसे बहुत अधिक थे। बहुत से लोग समझते थे कि यह सुधारक कहता तो ठीक है, परन्तु यह संन्यासी है, नि:शंक है; हम इतना त्याग नहीं कर सकते। ऐसे लोग आर्यसमाजी न भी रहे हों, परन्तु वे महर्षि के भक्त थे और उन्हें आर्य जाति का रक्षक समझते थे।

इस समय उत्तरी भारत में महर्षि की अपूर्व स्थिति थी। वह आर्य जाति (हिन्दू जाति के) के नेता, सुधारक और रक्षक माने जाते थे। आर्य जाति का प्राण गो वंश है। इस समय गोरक्षा के लिए महर्षि दयानन्द से बढ़कर ऊंची आवाज उठानेवाला कोई नहीं था। महर्षि ने गो-करुणानिधि लिखकर आर्य जाति की आंदोलनों का यत्न किया था। वह जिस किसी भी सरकारी अफसर से मिले, उसके सम्मुख भारत में गोहत्या बन्द कराने का जोर दिया। इतना ही नहीं, महर्षि के सिंहनाद से पहले ईसाई, पादरी और मुसलमान मौलवी हिन्दू-धर्म पर गहरी चोटें पहुंचा रहे थे। बेचारे हिन्दू पण्डित मूर्तियों और पुराणों के बोझ से दबे हुए होने के कारण अपनी पीठ भी सीधी न कर सकते थे, शत्रुओं के प्रहारों का क्या उत्तर देते ? पादरी और मौलवी हिन्दू-क्षेत्र में से खूब फसल काट रहे थे। महर्षि दयानन्द ने जहां एक ओर आर्य जाति की पीठ पर से पत्थर और पोथी का बोझ हटाकर उसकी कमर सीधी कर दी, वहां दूसरी ओर पादरियों और मौलवियों के तीरों को रोकने के लिए तर्क की ढाल खड़ी कर दी। न केवल इतना ही, महर्षि दयानन्द प्रतिभाशाली योद्धा था। वह जानता था कि जो आदमी केवल गढ़ की ओट से दुश्मन के वार रोकता है, वह कभी दुश्मन को हरा नहीं सकता। दुश्मन की हिम्मत तोड़ने के लिए उल्टा आक्रमण भी चाहिए। पादरी और मौलवी पुराणों की कथाओं के हवाले दे-देकर आर्य जाति को निरुत्तर कर रहे थे। पुराणों का त्याग करके, मूर्ति-पूजा को वेद-विरुद्ध बतलाकर महर्षि ने वे छिद्र बन्द कर दिये, जहां से होकर दुश्मन के गोले आर्यपुरी में आ रहे थे। इस प्रकार घर की रक्षा का पूरा प्रबन्ध करके उस चतुर सेनानी ने अपनी समालोचना-रूपी सेना का मुंह बाहर को मोड़ा, और मैदान में प्रत्याक्रमण कर दिये। महर्षि ने इंजील और कुरान हाथ में लिये, और ईसाइयों और मुसलमानों को बताया कि तुम दूसरों की आंखों में तिनका ढूंढने जा रहे हो, पहले अपनी आंख का शहतीर तो संभाल लो! ईसाइयों और मुसलमानों को कोमल-प्रकृति हिन्दू से कभी प्रत्याक्रमण की आशा न थी। वे हरिण से यह आशंका न करते थे कि वह सींग मारेगा। पादरी और मौलवी इस आकस्मिक प्रत्याक्रमण से झुंझला उठे। उधर आर्य जाति का हृदय फूल उठा। आर्य धर्म और आर्य सभ्यता की रक्षा भी हो सकती है, आर्य वीरों के इतिहास का भी कोई रखवाला है, आर्य जाति भी अपने मान को बचा सकती है-इन विचारों से, आर्य पुरुषों की सांस प्रसन्नताभरी आशा से भरपूर होकर जोर से चलने लगी। जो आर्यजन महर्षि के कार्य के महत्त्व को समझ सकते थे, प्रसन्न थे कि परमात्मा ने आर्य-धर्म और आर्य सभ्यता का रक्षक भेज दिया है। जो लोग महर्षि दयानन्द के खण्डनों को देखकर घबराते हैं, वे कभी उन स्थितियों पर विचार नहीं करते, जिनमें महर्षि को काम करना पड़ा। स्थिति यह थी कि आर्य धर्म पर ईसाइयों और मुसलमानों के भयंकर आक्रमण हो रहे थे। उन्हें सफलता भी प्राप्त हो रही थी। सफलता के दो कारण थे। एक तो आर्य जाति में आई हुई बुराइयों के कारण घर की निर्बलता, और दूसरा विरोधियों का निष्ठुरता से आक्रमण महर्षि ने स्थिति को पहचानकर ठीक उपाय का प्रयोग किया। घर में सुधार और आक्रमण करने वालों पर प्रत्याक्रमण- ये दो ही उपाय थे। वह स्थिति खतरे से भरी हुई थी, इस कारण धर्म के सेनापति को युद्ध के नियमों के अनुसार कठोर साधनों का प्रयोग करना पड़ा। इसमें अनुचित क्या था?

महर्षि दयानन्द उत्तरी भारत में आर्य जाति के मान्य नेता थे। वह आर्यसमाजों के संस्थापक, गुरु और आचार्य थे। राजा और प्रजा की दृष्टि में वह भारत के अगुवाओं में एक थे। यह स्थिति थी, जब वह पंजाब का दौरा लगाकर 1877 ई० के जुलाई मास में युत्तप्रान्त में वापस गए। लगभग दो वर्ष तक आप बराबर युक्तप्रान्त में ही भ्रमण करते रहे। इस दौरे में प्रचार

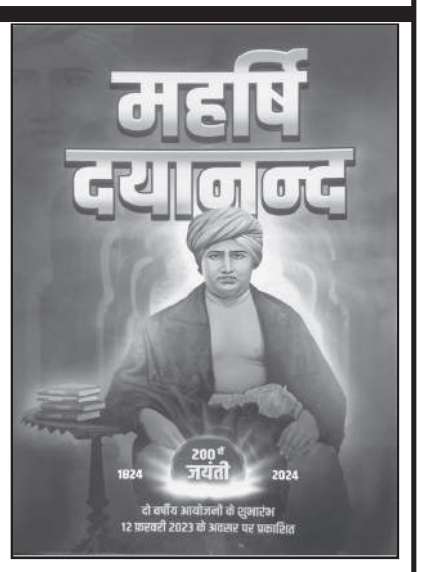

हुआ, नए आर्यसमाजों की स्थापना हुई, और मौलवियों तथा पादरियों से शास्त्रार्थ हुए। 29 जुलाई 1878 ई० को महर्षि दयानन्द रुड़की पहुंचे। वहां के व्याख्यानों में इंजीनियरिंग कॉलेज के विद्यार्थी और प्रोफेसर लोग आया करते थे। उन लोगों के प्रश्न प्राय: विज्ञान के विषय पर होते थे। महर्षि जी ने एक दिन इसी विषय पर बातचीत की कि प्राचीन भारत में विज्ञान था या नहीं। आपने वेदों तथा आर्ष ग्रन्थों के अनेक प्रमाण देकर बताया कि प्राय: सभी मुख्य-मुख्य वैज्ञानिक सिद्धान्त, जिन पर नए विज्ञान को गर्व है, हमारे साहित्य में विद्यमान हैं। रुड़की से अलीगढ़ होते हुए महर्षि जी अगस्त मास के अन्त में मेरठ पहुंचे। **-क्रमश:**

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुन: प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन
www.vedicprakashan.com
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Solid foundation of rules

Rishi Dayanand was staying at Sardar Vikram Singh's place in Jalandhar. Sardar ji asked Swami ji about the power of celibacy. Swami ji said that one can get immense strength by celibacy. Sardar Saheb did not believe and started asking for proof. Swami ji remained silent at that time. In the evening, Sardar Sahib went out sitting in his car. A fine pair of horses were harnessed to the cart. The coachman took hold of the reins and waved the whip. The pair of horses which used to talk to the air as soon as they got the signal, remained only by raising their front legs. The coachman got annoyed. Sardar Sahib started giving it here and there in surprise. When I looked back, He looking that Swamiji was smiling holding the car. Sardar Sahib got an example of the power of celibacy and Swamiji left the car smiling .

During his travels in Punjab, Rishi Dayanand used to write Vedabhashya, for this reason two-three for pundits used to stay with him. The writer lived for correspondence. He used to explain one by one the symptoms given in order in 'Aryaeddeshya-ratnamala'. All the lectures were classical. In the context of classical subjects, he used to condemn the current evils. All kinds of faults, religious, social or political, were discussed. The Sudarshan Chakra used to revolve on all kinds of evils. No living Shakti was taken into account. There were only two things in the vision of the sage - one was truth and the other was falsehood. Vindication of truth and denial of untruth, this was their religion. Here there was neither concern for the subjects, nor fear of the king. His aim was to do all kinds of good in the world. At his residence, Swamiji used to wear simple clothes, but at the time of lectures, he used to wear a silk Pitambar on his head, a yellow silk dhoti below, and a woolen robe on top. The body was curvy and long. The face was full and bright like the full moon. It rained heavily from the bowels. It was Prabhav-yukta idol, which in a few days created a religious upheaval across Punjab, and shook the palace of delusional thoughts.

To be Continue.....

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

श्री अशोक आर्य बने आर्य केन्द्रीय सभा गुरुग्राम के प्रधान

गत दिनों आर्य केन्द्रीय सभा गुरुग्राम (हरियाणा) का निर्वाचन सम्पन्न हुआ, जिसमें वर्ष 2024-25 के लिए प्रधान के रूप में श्री अशोक आर्य जी को निर्वाचित घोषित किया गया। इसके साथ ही महामन्त्री के रूप में श्री धर्मेन्द्र बजाज एवं कोषाध्यक्ष श्री अंजनी कुमार असीजा को चुना गया। **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से नव निर्वाचित अधिकारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।**

पृष्ठ 4 का शेष

शिविर के समापन समारोह में श्री विनय आर्य जी और सभा प्रधान श्री धर्म पाल आर्य जी का विशेष मार्ग दर्शन प्राप्त रहा। इस आयोजन के लिए हम प्रधान जी, विनय जी, बृहस्पति जी व राजू जी का विशेष धन्यवाद प्रकट करते हैं व भाई प्रदीप माथुर, भाई संदीप, भाई केशव व बहन प्रियंका का विशेष आभार व्यक्त करते हैं।

प्रथम पृष्ठ का शेष

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर भव्य एवं दिव्य ऋषि मेला ...

वेदालंकार जी, डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी, डॉ. श्री गोपाल बाहेती जी, डॉ. जगदेव विद्यालंकार जी, डॉ. रामचन्द्र जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य जी, श्री सत्यानन्द आर्य जी, विधायक एवं पूर्व मंत्री श्रीमती अनीता भदेल जी, डॉ. स्वामी देवव्रत जी, उप महापौर नीरज जैन जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी विवेकानन्द परिव्रजाक जी, पूर्व लोकायुक्त सज्जन सिंह कोठारी जी, युवा संन्यासी स्वामी सच्चिदानन्द जी, राजस्थान सभा के प्रधान श्री किशन लाल गहलोत जी, उत्तर प्रदेश सभा के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी, आर्य केन्द्रीय सभा के महामंत्री श्री सतीश चडडा जी, डॉ. सतीश पूनिया जी इत्यादि महानुभाव उपस्थित रहे तथा सभी ने आर्य समाज के उत्थान प्रचार-प्रसार और विस्तार को आधार बनाकर प्रेरक वक्तव्य उपस्थित विशाल जनसमूह को प्रदान किये।

14 अक्टूबर से प्रांरम्भ हुए यर्जुवेद पारायण महायज्ञ की पूर्ण आहुति डॉ. कमलेश शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में 20 अक्टूबर को संपन्न हुई। इस महायज्ञ में सैकड़ो यजमानों ने आहुति देकर विश्व कल्याण की कामना की। प्रतिदिन प्रात: आसन, प्राणायाम, ध्यान और संध्या के सत्र चलते रहे। कार्यक्रम के आरम्भ में परोपकारिणी सभा के प्रधान श्री ओममुनी जी, सम्पूर्ण कार्यक्रम के स्वागताध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी, चैयरमैन जीबीएम ग्रुप ने ध्वजारोहण किया, इस अवसर पर श्री ओममुनी जी ने वेद और महर्षि दयानन्द की शिक्षाओं का संसार के कल्याण लिए प्रचार करने का संकल्प लेने की बात कही। उद्घाटन सम्मेलन के अवसर पर श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी ने अपने स्वागत भाषण में आधुनिक युग में महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारो की प्रासंगिकता और आर्य समाज के सेवा कार्यो की सराहना करते हुए, संपूर्ण विश्व में आर्य समाज के विस्तार पर बल दिया। माननीय राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के उपकारों स्मरण करते हुए, आर्यजनों को वेद मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में वेदों की ओर लौटों सत्र में महर्षि की शिक्षाओं का अनुकरण करने का संदेश दिया गया। संपूर्ण कार्यक्रम में नारी जाति के सम्मान आर्य समाज और राजनीति, आर्य समाज और सोशल मीडिया, आर्य समाज के गुरुकुल दशा और दिशा, आर्य समाज वर्तमान और भविष्य, काफी विषयों पर आधारित विशेष सत्रों में, विशेष चिन्तन, मनन पूर्वक उद्बोधन प्रदान किये गये।

इस अवसर पर सुश्री रुचि आर्या, ब्रह्मचारी बिमल पाँण्डीचेरी, ब्रह्मचारी शिवनाथ रोजड़, आचार्य ब्रह्मदत्त आर्य, स्वामी ऋतस्पति गुरुकुल होशंगाबाद, आचार्य धनंजय गुरुकुल पौंधा, राजस्थान के 30 शिक्षक-शिक्षिकाओं सहित डा. निखिल आर्य, आचार्य बृजानन्द देवकरणी, ब्रह्मदत्त शर्मा, श्रीमती शकुन्तला देवी, ब्रह्मचारी मनीष आर्य , सुश्री कंचन आर्या, आचार्य युवराज रोजड़ इत्यादि महानुभावों को पुरुस्कार और स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। गुजरात के माननीय राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी, श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी, सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी सहित सभी संन्यासियों, विद्वानों, सभाओं के अधिकारियों का परोपकारिणी सभा के प्रधान श्री ओम मुनी जी, मंत्री श्री कन्हैया लाल आर्य जी व स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी द्वारा साफा बांधकर और शॉल ओढ़ाकर तथा स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। महाराष्ट्र से पधारे 100 वर्ष से अधिक आयु वाले स्वामी सोमानन्द जी का विशेष अभिनन्दन किया गया।

ऋषि मेले के अन्तर्गत सरस्वती भवन में महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा काम में ली जाने वाली वस्तुओं व चित्रों की प्रदर्शनी दर्शकों के लिए आकर्षण का केन्द्र बनी। प्रदर्शनी में महर्षि द्वारा लन्दन से खरीदी प्रिन्टिंग मशीन, उदयपरु नरेश व शाहपुरा नरेश द्वारा महर्षि दयानन्द को विदाई के समय भेंट किया गया शॉल, स्वामी जी द्वारा लिखी गई पुस्तकें, उनके द्वारा प्रयोग की गई वस्तुएं जिसमें ताम्र कमंडल, तुम्बा, रेत घड़ी, तराजू, पलड़े, उस्तरा, चिमटी, हस्ताक्षर की मोहर, आचमन पात्र, दवात, चाकू, हिसाब की बही, सूची पत्र, यज्ञ के विविध काष्ठ पात्र इत्यादि प्रदर्शित किए गए हैं। साथ ही स्वामी जी की पुस्तकों के विभिन्न संस्करणों एवं हस्तलिखित ग्रन्थों की प्रतिलिपियां, पत्र व्यवहार एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती की स्मृति में भारत सरकार द्वारा प्रकाशित डाक टिकट भी प्रदर्शित किए गए हैं।

इसके अतिरिक्त श्रीगंगाशरण आर्य द्वारा प्रदर्शित शाकाहारी प्रदर्शनी ने लोगों का ध्यान आकर्षित किया। इस विशेष अवसर पर गुरुकुल माउण्ट आबू के बह्मचारियों द्वारा 'गुरु दीक्षा' के सम्बन्ध में एक नाटिका का मंचन किया। जिसकों सभी आर्यजनों ने बहुत सराहा। इस अवसर पर नौ व्यक्तियों को वानप्रस्थ दीक्षा दी गई। वेद कण्ठीस्थीकरण कार्यक्रम प्रतिवर्ष की भांति हुआ जिसमें वेद कण्ठस्थ किये हुये ब्रह्मचारियों को सम्मानित किया गया।

मेला स्थल ऋषि उद्यान की भव्य सजावट की गई थी। आकर्षक तोरण द्वार, ओम् के चित्र, बैनर, पोस्टर, विशाल पण्डाल, प्रेरणा स्रोत प्रवनचन तथा आडिटोरियम की सोभा देखते ही बनती थी। सूर्यास्त होते ही रंग-बिरंगे विविध आकार प्रकार की चित्ताकर्षक विद्युत लाइटों की शोभा देखते ही बनती थी। आर्यवीर हिम्मतसिंह ने प्राचीन वस्तुओं की प्रदर्शनी लगाई जिसमें प्राचीन आर्य साहित्य, आर्य जगत् के प्रारम्भ समाचार पत्र, डाक टिकटें, महर्षि दयानन्द के चित्र आदि प्रदर्शित किये गये। जिनकी सभी ने सराहना की।

तीन दिवसीय ऋषि मेले के दौरान सनातन गौ सेवा समिति पाली के 23 कमांडो ने सुरक्षा व्यवस्था की कमान सम्भाली। दल के प्रमुख प्रेम कुमार आर्य के नेतृत्व में अंकित मेवाड़ा, विनय आर्य सहित 23 सदस्य सुरक्षा व्यवस्था में 24 घण्टे लगे रहे। इस कार्य के लिए सभा के अधिकारियों ने उनका धन्यवाद व सम्मान किया। इस सम्मेलन के उचित ढंग से सम्पन्न होने पर सभा प्रधान ओममुनी जी तथा सभा मन्त्री कन्हैयालाल आर्य ने सभी साथियों व सहयोगियों के साथ-साथ सभी आर्यजनों का यह कहते हुए धन्यवाद किया कि यदि हम सभी व्यवस्थायें भी करते और आप न आते, तो ये सब कार्यक्रम सफल न होता। इसकी सफलता में आप सबका पूर्ण सहयोग सभी अधिकारियों को मिला है अत: सभा आपके प्रति धन्यवाद, आभार एवं कृतज्ञता प्रकट करती है।

- कन्हैयालाल आर्य,
मन्त्री-परोपकारिणी सभा

शोक समाचार

आचार्य आनन्द प्रकाश जी को पितृशोक

आर्यसमाज पंजाबी बाग के धर्माचार्य, आर्य वीर दल असम के पूर्व संचालक आचार्य आनन्द प्रकाश जी एवं आर्य प्रतिनिधि सभा असम के महामन्त्री श्री प्रभाकर शर्मा जी के पूज्यपिता श्री भवानी शंकर शर्मा जी का 29 सितम्बर, 2024 को आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ सम्पन्न हुआ।

श्री भगत सिंह राठी जी का निधन

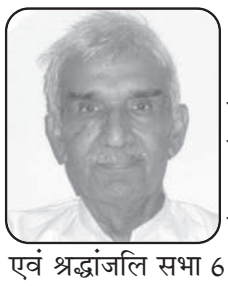

आर्यसमाज राजनगर पालम कालोनी के संरक्षक, वरिष्ठ सदस्य एवं पूर्व अधिकारी श्री भगत सिंह राठी जी का 31 अक्तूबर, 2024 को आकस्मिक निधन हो गया। अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ पालम गांव शमशानघाट में सम्पन्न हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 6 नवम्बर, 2024 को राजनगर-2 स्थित उनके आवास पर सम्पन्न हुई, जिसमें उनके निजी परिवाजनों सहित आर्यसमाज के अधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्रीमती सरोज यादव जी को मातृशोक

आर्यसमाज शादीखामपुर की सदस्या एवं सभा के विभिन्न प्रकल्पों से जुड़ी श्रीमती सरोज यादव जी की पूज्या माता श्रीमती प्रेमवती यादव जी का 2 नवम्बर, 2024 को आकस्मिक निधन हो गया। अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ सम्पन्न हुआ। उनका उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 6 नवम्बर, 2024 को उनके आवास गली नं. 4 समयपुर दिल्ली-42 सम्पन्न हुई, जिसमें उनके निजी परिवाजनों सहित आर्यसमाज के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

प्रथम 2 का शेष

असली बाबा - बनाम - नकली ....

योगनियों और शमशान के प्रेत आपके काम में प्रगति नहीं करने दे रहे, देवताओं का प्रकोप है। देवियों का गुस्सा है और लोग इन बाबाओं की मूर्खतापूर्ण बातों में आकर पाखंड में फंसकर पूजा-पाठ करवा कर अपनी पूरी जिदगी तबाह कर देते हैं। शनि के लिए शनि दान, मंगल के लिए मंगल दान, काली के लिए बलि, शमशान के प्रेतों के लिए मुर्गा और न जाने क्या-क्या।

सोचिए, आप किसी दफ्तर में किसी काम से जाते हैं, वहां आपको रिश्वत देकर कोई काम कराना पड़े, तो क्या यह भ्र टाचार नहीं है? यदि है, तो अपनी आत्मा से जवाब दीजिए। दरगाह हो या बाबा, वहां पैसे देकर अपनी मन्नत मांग रहे हैं, तो यह आस्था कैसे? दरअसल, यह एक भीड़ है! भिखारियों की, चालबाजों की, बेईमानों की, पाखंडियों की, धोखेबाजों की। यह भीड़ है, जो लोगों को सदियों-सदियों से आस्था के नाम पर चूस रही है। आज भी यह खेल जारी है, अब इंस्टा और अन्य साधनों से बाबाओं का जन्म हो रहा है। अगर इनकी करतूत के खिलाफ कोई बोले, तो उसे धर्म से जोड़कर केस करने की धमकी दी जाती है।

-सम्पादक

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज पूर्वी बाबरपुर
शाहदरा, दिल्ली-32

प्रधान : श्री ऋषिपाल खोखर
मन्त्री : श्री सहस्रपाल आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री सोहनलाल आर्य

खेद व्यक्त - खेद है कि दीपावली, विश्वकर्मा पूजा (गोवर्धन) एवं भाईदूज के अवकाश के कारण आर्यसन्देश साप्ताहिक का गत अंक दिनांक 28 अक्तूबर से 3 नवम्बर, 2024 प्रकाशित नहीं हो सका। पाठकों को हुई असुविधा के लिए खेद है। - *सम्पादक*

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 4 नवम्बर, 2024 से रविवार 10 नवम्बर, 2024

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 07-08-09/11/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 06, नवम्बर, 2024

ओ३म्

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

के तत्वावधान में

स्वाध्याय शिविर एवं वैदिक धार्मिक यात्रा

28 दिसंबर 2024 से 2 जनवरी 2025

स्थान: वैदिक विद्या केन्द्र, माथुर रोड, गणपति चेट्टीकुलम, पुदुचेरी

रेलवे यात्रा : प्रस्थान - 26 दिसंबर 2024, रात्रि 21:05 बजे, नई दिल्ली स्टेशन से 12622 तमिलनाडु एक्सप्रेस द्वारा 28 दिसंबर 2024 प्रातः 6:35 बजे चेन्नई सेंट्रल पहुंचना।

वापसी - 2 जनवरी 2025 रात्रि 22:00 चेन्नई सेंट्रल स्टेशन से 12621 तमिलनाडु एक्सप्रेस द्वारा 4 जनवरी 2025 प्रातः 06:30 बजे दिल्ली पहुंचना।

हवाई जहाज यात्रा : प्रस्थान - दिल्ली से प्रातः 28 दिसंबर 2024

वापसी - मुंबई सेंट्रल से रात्रि 2 जनवरी 2025

कार्यक्रम

28 दिसंबर 2024 शुभारंभ	:	स्वाध्याय शिविर
1 जनवरी 2025 समापन	:	स्वाध्याय शिविर
1 - 2 जनवरी	:	भ्रमण

* रेल/हवाई यात्रा में रास्ते की सभी व्यवस्थाएं साधक को स्वयं करनी होगी।
* पुदुचेरी पहुंचने पर, अधिकतम 40 साधकों की आवास, भोजन तथा भ्रमण की व्यवस्था रहेगी।
* साधक अपनी टिकट 15 नवम्बर 2024 तक बुक करवा कर सूचित करें।
* बुकिंग कैंसिल होने पर पैसा वापिस नहीं किया जायेगा।
* प्रति साधक आवास, भोजन, भ्रमण सहित कुल व्यय : 7000/-

स्वाध्याय शिविर एवं वैदिक धार्मिक यात्रा

आर्य सतीश चड्डा, अध्यक्ष — सुखवीर सिंह आर्य, उपाध्यक्ष — डॉ. मुकेश आर्य, संयोजक (08700433153)

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

वर्ष 2025 का कैलेण्डर प्रकाशित

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 प्रतियों से अधिक के आर्डर पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
मो. 09540040339

ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com

ओ३म्

भारत में फेले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

संस्करण	मुद्रित मूल्य	प्रचारार्थ मूल्य
प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16	₹ 80	₹ 60
विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16	₹120	₹80
पॉकेट संस्करण	₹80	₹50
विशिष्ट पॉकेट संस्करण	₹150	₹ 100
स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8	₹200	₹120
उपहार संस्करण	₹1100	₹750
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द	₹250	₹160
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द	₹300	₹200

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group
Our milestones are touchstones

TECHNOLOGY DRIVING VALUE TOWARDS CREATING A CLEANER | GREENER | SAFER TOMORROW.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह